Philosophy

**Explore**–Journal of Research for UG and PG Students
**ISSN** 2278 – 0297 **(Print)**
**ISSN** 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

# विश्वशांति में धार्मिक सहिष्णुता का योगदान

• **Subita Kumari** • **Annya Singh**
• **Keerti Chaudhary Jha**

Received : November 2013
Accepted : March 2014
Corresponding Author : Keerti Chaudhary Jha

**Abstract :** सभी धर्मों के क्रियाकलापों, उपदेशों, सिद्धांतों और नियमों के सार पर दृष्टिपात करें तो इनका लक्ष्य एक ही है-सबका कल्याण करना। हमारी संस्कृति का आधार धर्म ही है। व्यवहारिक रूप में धर्म हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। धर्म शांति का मूल स्तम्भ है । इसके द्वारा संरक्षण, प्रेम, अहिंसा, त्याग की मूल भावना को विकसित किया जाता है। धर्म के मूल स्वरूप को न समझने के कारण मानव समाज ऐसे अनेक विरोधी वर्गों में विभाजित हो गया है, जिनमें निरन्तर संघर्ष चलता रहा है। इसके कारण होने वाली हिंसा ने कई धार्मिक और गैरधार्मिक विचारकों को धार्मिक सहिष्णुता की ओर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ विभिन्न धर्मों के प्रति आदर एवं प्रेम के भाव का प्रदर्शन करना है। धार्मिक सहिष्णुता धार्मिक संघर्ष को रोकने के लिए विभिन्न धर्मों के प्रति सहनशीलता के दृष्टिकोण को प्रश्रय देने का काम करता है। धार्मिक सहिष्णुता के विकास के लिए मानव को धर्म के मूल तत्वों की सही जानकारी होनी चाहिए। धार्मिक सहिष्णुता एकता एवं सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सहिष्णुता का वास्तविक महत्व स्वतंत्रता और समानता के वातावरण में ही संभव है। धार्मिक कटट्रता के निराकरण के लिए भी धार्मिक सहिष्णुता अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्व के विभिन्न धर्मों में व्याप्त धार्मिक पद्धतियाँ विश्वशांति के विचार को प्रकट करती है। सभी धर्मो के प्रार्थना की विधि व्यक्ति के मानसिक एवं आन्तरिक शांति पर बल देती है और जब व्यक्ति शांत होगा तो हमारा समाज शांत होगा और यदि समाज में शांति होगी तो देश में भी शांतिमय वातावरण स्थापित होगा। यदि संसार के सभी देशों में शांति रहेगी तो वैश्विक शांति की स्थापना भी अपने-आप संभव होगी।

***Keywords:*** गैरधार्मिक, धार्मिक सहिष्णुता, धार्मिक कटट्रता, आन्तरिक शांति, वैश्विक शांति।

**Subita Kumari**
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

**Annya Singh**
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

**Keerti Chaudhary Jha**
Asst. Professor, Department of Philosophy,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail :

**परिचयः**

आज विश्व की शांति व्यवस्था अत्यधिक ज्वलंत समस्या है। इस समस्या के मूल कारण के रूप में हम धार्मिक असहिष्णुता को पाते हैं। प्राचीनकाल से ही धर्म को लेकर जितने रक्तपात हुए हैं, उतना किसी और विषय पर नहीं हुआ क्योंकि भिन्न-भिन्न धर्मों के अनुयायी अपने धर्म के प्रति इतने रूढ़िवादी हैं कि दूसरे धर्म के विचारों को स्वीकारने में सहिष्णु नहीं रहे हैं। इसलिए धर्म के नाम पर संघर्ष एवं अशांति फैली रहती है। अभी हाल ही में गया में हुए आतंकवादी हमले का उदाहरण हमारे समक्ष है, महाबोद्धि मंदिर में बम विस्फोट द्वारा मंदिर एवं उपस्थित लोगों को क्षति पहुँचाई गई। इस आतंकवादी हमले से समाज में दहशत का वातावरण फैला है और शांति भंग हो गई है। विश्व के पाँच मुख्य धर्म- जैन, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई एवम् हिन्दू धर्म में सहिष्णुता के पक्ष को सामने रखकर हम अशांति को दूर कर सकते हैं। जिससे विश्व में एकता, समृद्धि एवं व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो सके।

**उद्देश्यः**

- विश्वशांति की समस्या पर विचार करना तथा विश्व में अशांति के मूल कारणों को खोजना।
- विश्व के प्रमुख धर्मों में विश्वशांति के विचार को प्रस्तुत करना।
- आतंकवाद और धार्मिक हिंसा के कारणों को प्रस्तुत करना।
- सभी धर्मों में समानता को प्रकट करना।
- सभी धर्मों में समभाव और सद्भावना को बनाए रखने की कोशिश करना ताकि एक सम्प्रदाय के लोग दूसरे सम्प्रदाय को हीन और अपने को सर्वश्रेष्ठ न मानें।

**विधिः**

यह शोधपत्र मुख्य रूप से विभिन्न पुस्तकों, समाचारपत्रों, पत्रिकाओं तथा इंटरनेट से संग्रहित अध्ययन सामग्री पर आधारित है। इस शोधकार्य के लिए निम्नलिखित विधि को अपनाया गया :-

वर्णनात्मक विधि

विश्लेषणात्मक विधि

समीक्षात्मक विधि

**प्रस्तावनाः**

- यह संभावना है कि यदि हम धर्मों के रूढ़िवादी पक्ष को छोड़ उसके नैतिक मूल्यों को अपनाते है तो हिंसा एवं अशांति रोकी जा सकती है।
- यह भी संभावना है कि धार्मिक सहिष्णुता के द्वारा विश्व में शांति व्यवस्था कायम होगी एवम् जनमानस का विकास होगा।
- धार्मिक सहिष्णुता के द्वारा ही जनमानस में एकता स्थापित हो सकती है।

**धार्मिक सहिष्णुता का अर्थः**

धार्मिक सहिष्णुता का अर्थ विभिन्न धर्मों के प्रति आदर एवं प्रेम के भाव का प्रदर्शन करना है। मानव की सबसे बड़ी दुर्बलता यह है कि वह अपने धर्म को श्रेष्ठ और दूसरे के धर्म को तुच्छ समझता है। जिसके फलवरूप धर्म को लेकर संघर्ष होते रहते है। धार्मिक-सहिष्णुता इस संघर्ष को रोकने के लिए विभिन्न धर्मों के प्रति सहनशीलता के दृष्टिकोण को प्रश्रय देने का काम करती है। महात्मा गाँधी भी मानते हैं कि धार्मिक सहिष्णुता अहिंसा के सिद्धांत का प्रतिफल है। धार्मिक सहिष्णुता सभी धर्मों के प्रति उदारता की भावना को प्रश्रय देती है।

**धार्मिक सहिष्णुता का महत्वः**

धार्मिक सहिष्णुता एकता एवं सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। धर्मों में सामंजस्य, शांति और भाईचारें की स्थापना के लिए धार्मिक सहिष्णुता का विकास आवश्यक है। ''जॉन लॉक' के अनुसार सहिष्णुता केवल उचित ही नहीं अपितु अनिवार्य है। धार्मिक कटट्रता के निराकरण के लिए भी धार्मिक सहिष्णुता अत्यंत महत्वपूर्ण है। सहिष्णुता का वास्तविक महत्व स्वतंत्रता और समानता के वातावरण में संभव है। धार्मिक सम्प्रदायों के निराकरण के लिए धार्मिक सहिष्णुता का बहुत महत्व है।

**विश्व के मुख्य धर्मः**

विश्व के मुख्य धर्मों में धार्मिक सहिष्णुता पाई जाती है, ये धर्म जैन, बौद्ध, ईस्लाम, ईसाई एवं हिन्दू धर्म हैं। सहिष्णुता की नींव पर यह धर्म मानवजीवन में आज भी जीवित हैं। विभिन्न धर्म की अपनी संस्था एवं पूजा के स्थान होते हैं। हिन्दू मंदिर, मुस्लिम मस्जिद, ईसाई गिरिजाघर, जैन तीर्थकर एवं बौद्ध संघ

में विश्वास रखते हैं। इस रूप में हम देखते हैं कि सभी धर्म अपने प्रतीकों एवं चिन्हों के प्रति आस्था रखते हैं। अत: इन सारे धर्मों में एकता विद्यमान है।

**विश्व के विभिन्न धर्मों में निहित एकता:**

विश्व के प्रमुख धर्म विभिन्न परिवेश संस्कृति एवं समाज के सूचक हैं। यह धर्म मानवीय विचारों में, व्यवहार में एवं पद्धत्तियों में जीवित है। विभिन्न धर्म (बौद्ध धर्म , जैन धर्म, ईसाई धर्म, ईस्लाम धर्म, हिन्दू धर्म) कहीं न कहीं से आपस में जुड़े हुए हैं। मानवीय गुण सत्य, दया, प्रेम, करूणा, अहिसां, क्षमा, शांति, दुख:नाश इत्यादि ऐसे गुण हैं जो धर्मों के मूल में स्थान रखते हैं । विभिन्न धर्मों में समय-समय पर बदलाव आता है किन्तु मूल में शांति के भाव निहित रहते हैं। धार्मिक सहिष्णुता के द्वारा धर्मों में परस्पर शांति और सहअस्तित्व स्थापित कर सकते हैं।

धार्मिक सहिष्णुता का आधार लोकतांत्रिक दृष्टिकोण है। लोकतंत्र में धार्मिक विचारों में माननेवालों में संघर्ष होता है। आदर्श लोकतंत्र में धार्मिक सहिष्णुता आवश्यक है।

धर्मों में आंतरिक स्वरूप में जटिलता एवं विरोध धार्मिक सहिष्णुता के विरोधी रूप को प्रस्तुत करती है। समकालीन दर्शन में धार्मिक सहिष्णुता को धार्मिक समन्वय के रूप में महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, राम मोहन रॉय आदि विचारकों ने प्रस्तुत किया है।

विवेकानन्द के अनुसार ऐसे सर्वव्यापी या सार्वभौम धर्मों में दो गुणों का होना आवश्यक है, एक इसके दरवाजे हर व्यक्ति के लिए खुले होने चाहिए। व्यक्ति के धर्म का निर्धारण जन्म के आधार पर नहीं होना चाहिए, बल्कि हर व्यक्ति को इस बात की छूट मिलनी चाहिए कि वह किस धर्म को अपनाएँ। दूसरे सार्वभौम धर्म को सभी धार्मिक सम्प्रदायों को संतुष्ट करने में समर्थ होना चाहिए।

धार्मिक सहिष्णुता सामाजिक शान्ति की प्रथम एवं अंतिम कड़ी है। प्रथम इस रूप में, इसके आधार पर ही व्यक्ति एवं समाज शान्ति की ओर अग्रसर हो सकता है। अंतिम इस रूप में धार्मिक असहिष्णु, समाज एवं व्यक्ति को प्रदान नहीं कर सकती है।

आतंकवाद के नाश एवं विश्व शान्ति की स्थापना के लिए हमें प्रयासरत रहना चाहिए। अत: इसका उपाय भी सरल एवं सुगम है किन्तु व्यक्ति अपने स्वभाव की जटिलता को नहीं छोड़ता है जिससे समाज में अशान्ति व्याप्त होती है।

**निष्कर्ष एवं सुझाव:**

विश्व में अशांति का कारण कहीं न कहीं हमारा धार्मिक दृष्टिकोण है। भारत जैसे बहुधर्मी देश में तो, यह समस्या और भी विकट है। धार्मिक दंगों को असभ्यता की चरम-पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है। इन दंगों के दौरान कुछ लोग सिर्फ इसलिए किसी की जान-माल और इज्जत को नुकसान पहुँचाते हैं क्योंकि वह किसी दूसरे धार्मिक समूह का है। किसी भी सभ्य समाज में खास तौर से एक ऐसे धर्म-निरपेक्ष और लेकतांत्रिक राज्य में जिसमें विभिन्न धर्मों को मानने वाले और किसी धर्म को न मानने वाले मानववादी लोग भी रहते हैं। नागरिकों के शांतिमय सह-अस्तित्व के लिए धार्मिक सहिष्णुता एक अनिवार्य शर्त है। धार्मिक असहिष्णुता के कारण 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना स्वार्थ की भावना से दबती जा रही है। आतंकवाद, नरसंहार दमन की नीति हमारे धर्म को एवं उसके मूल स्वरूप को खतरे में डाल रही है। विश्व में व्याप्त गैरधार्मिक विचारधारा, अनैतिकता, आतंकवाद, हिंसा, धार्मिक झगड़े तथा खून-खराबा इत्यादि अशांति के मूल कारण हैं। अत: यदि हम इन बुराइयों को खत्म कर दें तो विश्व में शांति स्थापित हो सकती है।

धर्मों से आडम्बर व दिखावे को दूर रखें तभी हमें धार्मिक सहिष्णु बनने में सहायता मिलेगी। अपनी धार्मिक स्वतंत्रता की ही तरह दूसरे की धार्मिक स्वतंत्रता का हमें ध्यान रखना चाहिए। दूसरों के प्रति सम्मान एवं धार्मिक सहिष्णु होना नितांत आवश्यक है। यह उतना ही जरूरी है जितना कि व्यक्ति का अपने धर्म में आस्था। जिस प्रकार से नदियों का जल अपने प्राकृतिक रूप में अत्यंत निर्मल एवं स्वच्छ होता है किन्तु हम इसमें कारखाने का पानी एवं अपने घर का गंदा बहाकर इसे दूषित करते हैं। ठीक उसी प्रकार से धर्म का मूल स्वरूप भी निर्मल एवं स्वच्छ है, हमारा दृष्टिकोण इसे संकीर्ण एवं असुरक्षित बना देता है।

**ग्रंथ सूची:**


मचवे प्रभाकर, दफ्तुआर सुरेन्द्र नारायण (1974) विभिन्न धर्मों में ईश्वर कल्पना, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना।

डॉ॰ मसीह या॰ (1997) सामान्य धर्मदर्शन एवं दार्शनिक विश्लेषण, मोतीलाल बनारसी दास।

डॉ॰ मित्तल ए॰ के॰ (2009) भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, साहित्य भवन, आगरा।

डॉ॰ मिश्र हृदय नारायण (1995), धर्म दर्शन का परिचय, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद।

लाल बसंत कुमार (1992) समकालीन भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास।

डॉ॰ व्यास राम नारायण (1972), धर्म दर्शन, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

डॉ॰ शर्मा लक्ष्मी निधि (1997), धर्म दर्शन की रूपरेखा, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद।

डॉ॰ शर्मा सुखदेव सिंह (1972), धर्म दर्शन, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना–3.

प्रो॰ सक्सेना लक्ष्मी (1977), समकालीन भारतीय दर्शन, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।

डॉ॰ सिन्हा हरेन्द्र प्रसाद (1962) धर्म दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसी दास।

डॉ॰ सिन्हा राम प्रसाद (1984), सीतापुर रोड, लखनऊ – 226007.